विजय कुमार

पटना, बिहार

हिन्दी ग़ज़ल परम्परा में कबीर दास और उनकी ग़ज़ल

ग़ज़ल हिन्दी की अपनी विधा नहीं है। हिन्दी समाज ने अन्य विधाओं की तरह ही ग़ज़ल को अपनाया है। ग़ज़ल की शुरुआत फारसी से हुई है। प्रेम की बात कहने अथवा करने के लिए जो शब्द विधान फारसी में किया गया उसको हम लोग हिन्दी में ग़ज़ल के नाम से जानते हैं। फारसी में यह परम्परा इतनी विकसित और लोकप्रिय हुई की उर्दू के रचनाकारों ने इस विधा को अपनाया। और उर्दू में इसकी लोकप्रियता ने हिन्दी समाज को ग़ज़ल की तरफ आकर्षित किया। हिन्दी में भी प्रेम की बातें अब ग़ज़ल बन गयी। हिन्दी ग़ज़ल की उत्पत्ति, विकास और संरचना को लेकर डॉ. अमरनाथ अपनी किताब 'हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली' में लिखते हैं,

"उर्दू को यह लोकप्रिय विधा फारसी से प्राप्त हुई। लेकिन इसे सुगंध मिली हिन्दुस्तानी मिट्टी से। ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ है, प्रेमिका से वार्तालाप। इसी से जाना जा सकता है कि ग़ज़ल की मूल चेतना और संवेदना क्या तथा इसकी लोकप्रियता का राज क्या है। प्रेमिका से बातचीत के रूप में व्याख्यायित होने के कारण ग़ज़ल का प्रधान विषय प्रेम ही माना गया।"[1] पृष्ठ-140

जब हम ग़ज़ल शब्द का अर्थ ढूंढते हैं तो कई तरह के अर्थ सामने आते हैं। अरबी भाषा का एक शब्द है गजाल इसका अर्थ हिरण होता है। कुछ लोग ग़ज़ल शब्द की उत्पत्ति इससे भी मनाते हैं। वहीं कुछ विद्वान यह भी मानते हैं कि अरब में एक कवि हुए जिनका नाम ग़ज़ल था। इस कवि ने अपना जीवन प्रेम और मस्ती में गीत लिखते हुए व्यतीत किया। जिसके कारण बाद में प्रेम की कविताओं को ग़ज़ल कहा जाने लगा। वहीं मज़दा असद ने ग़ज़ल को दुल्हन कह कर संबोधित किया। ग़ज़ल की लोकप्रियता के पीछे सबसे बड़ा कारण ग़ज़ल की बनावट और बुनावट रही। कम शब्दों में अपनी बात को प्रभावी रूप में कहना ही ग़ज़ल की सबसे बड़ी विशेषता है। और ग़ज़ल में प्रेम की बात का होना चार चाँद लगने जैसा है। मौलाना अल्ताफ हुसैन अली कहते हैं,

"जहां तक ग़ज़ल की मूल प्रकृति का संबंध है, उसका विषय प्रेम के अतिरिक्त कुछ और नहीं। ग़ज़ल में जैसा कि विदित है, किसी विषय का क्रमबद्ध वर्णन नहीं होता, अपितु अलग-अलग विचार, अलग-अलग पद्यों में व्यक्त किए जाते हैं। अपने वर्तमान रूप में ग़ज़ल का प्रचलन पहले ईरान में और कोई डेढ सौ वर्ष से भारत में हुआ। यद्यपि मूलत: गजल की रचना जैसी कि ग़ज़ल शब्द से प्रकट है, केवल प्रेम संबंधी विषयों की अभिव्यक्ति के लिए हुई थी, किंतु बहुत दिनों के बाद उसका यह रूप सुरक्षित न रह सका।"[2]

उर्दू ग़ज़ल में एक से बढ़कर एक बड़े नाम हुए जिन्होंने इस विधा को एक नया मुकाम दिया। इसमें सबसे पहला नाम वली औरंगाबादी का आता है। इसके बाद मीर, सौदा, ग़ालिब, जैसे ग़ज़लगो हुए। उर्दू ग़ज़ल के बारे में

ये कहा जाता है कि ये गज़लें सिर्फ अपने प्रेम को ज़ाहिर करने के लिए लिखी गयी। और हिन्दी ग़ज़ल में इसका परिमार्जन हुआ। लेकिन डॉ. अमरनाथ इस बात को रेखांकित करते हुए कहते हैं,

"यह सही है कि आरंभिक ग़ज़ल की दुनिया इश्क और मोहब्बत तक सीमित रही लेकिन बाद में 'इश्क मज़ाजी' के साथ-साथ 'इश्क हकीकी' को स्थान देकर उसे आध्यात्मिक संवेदना से भी संबलित किया गया। अनेक बड़े शायरों ने जीवन, जगत, ईश्वर आदि से सम्बन्धित अपने विचारों को ग़ज़ल के प्रेमपूर्ण वातावरण में ही प्रस्तुत किया। उन्होंने गजल में बढ़ती हुई प्रेम-वासना को आध्यात्मिकता की ऊंचाइयों से थोड़ा रोका फलस्वरूप उर्दू गजल केवल प्रेमिका की गुफ्तगू न रहकर आध्यात्मिक विचारों की गूढ़ता को भावात्मकता के साथ प्रस्तुत करने का भी माध्यम बन गई।"[4] पृष्ठ- 140

बात जब हम हिन्दी ग़ज़ल की करते हैं तब हमें चौंकाने वाले तथ्य मिलते हैं। एस. एन. फारूख ने अपने लेख 'हिंदी-उर्दू ग़ज़लों का स्वर' (धर्मयुग, दीपावली विशेषांक, 1978) में लिखा है कि,

"यह विधा जब हिंदी साहित्य में प्रवेश करती है तो इसकी रोशनी से कला और साहित्य की दुनिया जगमगा उठती है। यह विधा जब हिंदी साहित्य में क़दम रखती है तो इस शान से रखती है कि न तो अब गुलो-बुलबुल की दास्तान है और न लैला-मजनूं के किस्से और न यह शमा परवाने की कहानी है, न हिज्रो-वस्ल (विरह-मिलन) के क़िस्से और न ही गैर-जरूरी फ़लसफ़ियाना गुत्थियाँ। ग़ज़ल उर्दू से हिंदी में क्या आई कि गोया गुलो-बुलबुल की सरहदों से निकलकर जीवन की सीमाओं में दाखिल हो गई। यदि आप हिंदी ग़ज़लों पर दृष्टि डालते हैं तो इसके एक- एक शब्द से देशभक्ति, इंसानी दर्द तथा राष्ट्रीय चेतना टपकती-सी प्रतीत होती है।"[4]

हिन्दी में ग़ज़ल कहने की शुरुआत ज्यादातर विद्वान हिन्दी के आदिकवि अमीर ख़ुसरो से मानते हैं। अमीर ख़ुसरो के बाद हिन्दी में ग़ज़ल कहने की परम्परा चल पड़ी। ख़ुसरो की ग़ज़लों में एक मिसरा हिन्दी का तथा एक मिसरा फारसी का होता था। वहीं कुछ विद्वान ये भी मानते हैं कि महमूद गजनवी के प्रपौत्र मसउद ने सबसे पहले हिन्दी में ग़ज़ल कहना शुरू किया। उनके दो दीवान फारसी में तथा एक दीवान हिन्दी में है। भक्तिकाल में मीराबाई के कुछ पदों में ग़ज़ल छंद का प्रयोग मिलता है। वहीं कबीर दास की एक पूरी ग़ज़ल आज हमलोगों को उपलब्ध है। कबीर दास के इस ग़ज़ल को रेखांकित करते हुए आचार्य प्रशांत लिखते हैं,

"एक-एक शेर अपनेआप में एक पूर्ण सूत्र है। उसको समझ लें तो प्रेम, सत्य, मन, आत्मा, जीवन सब स्पष्ट हो जाएँगे। गागर में सागर भरते हैं कबीर, चन्द लफ़्ज़ों में वो कह जाते हैं जो कहने के लिए बड़े-बड़े ग्रंथ, बड़े-बड़े शास्त्र पूरे न पड़ें।"[5]

कबीर दास की कविताओं को लेकर हमेशा बात होती है। कबीर दास हिन्दी के पहले ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी कविता में आम आदमी की आवाज को बुलंद किया। कबीर दास का जीवन बहुत रहस्यमयी रहा। कबीर दास के जन्म, जाति और मृत्यु के सम्बन्ध में भी बहुत सी किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कबीर दास निर्गुण पंथ के सबसे बड़े रचनाकार के रूप में जाने गए। और कबीर दास के नाम से एक पंथ की शुरुआत हुयी जिसे हम कबीर पंथ के नाम से जानते हैं। कबीर दास भक्तिकाल में एक ऐसे रचनाकार हुए जिन्होंने समाज के हर तबके को लताड़ लगाई। कबीर दास उस समय भी धर्म और संप्रदाय को लेकर बहुत सतर्क थे और सबसे बड़ा धर्म मानवता को ही मानते थे। कबीर दास ने समाज की बढ़ती हुई खाई को पाटने का काम किया। कबीर दास की कविताओं को किस तरह से देखा जाये इस पर बात करते हुए पुरुषोत्तम अग्रवाल अपनी 'किताब अकथ कहानी प्रेम की कबीर दास की कविता और उनका समय' में लिखते हैं,

"कबीर दास को अकेले नहीं पढ़ा जा सकता। उन्हें पढ़ना होगा, भक्ति संवेदना के समग्र सन्दर्भ में। ध्यान में रखने होंगे, इस संवेदना के आत्म-संघर्ष और वाद-विवाद और साथ ही विवादरत पक्षों के परस्पर संवाद, परस्पर समायोजन। त्यागना होगा इतिहास को बन्द गली और अपने मनोवांछित लक्ष्य को उस बंद गली का आखिरी मकान समझने का मोह।""कबीर दास ने हिन्दी में ग़ज़ल लिखा है। उसमें एक ग़ज़ल आज उपलब्ध है। वेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद से 4 भागों में प्रकाशित 'कबीर साहब की शब्दावली' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई थी। इसी पुस्तक में अन्य पदों के साथ ग़ज़ल शैली की यह एकमात्र रचना भी संकलित है। इस ग़ज़ल में कूल पांच शेर हैं। कबीर दास जी की ये ग़ज़ल हर पैमाने पर सटीक है। कुछ विद्वान इस ग़ज़ल को लेकर यह भी कहते हैं कि ये ग़ज़ल कबीर की नहीं है। ये कहने के पीछे वो कोई ठोस तर्क नहीं देते। बल्कि ये कहते हैं कि उस समय ग़ज़ल की ऐसी कोई परम्परा नहीं थी जिससे ये माना जाये कि ये ग़ज़ल कबीर दास जी की है। ग़ज़ल के व्याकरण के अनुसार ग़ज़ल का अंतिम शेर मकते का शेर कहलाता है। इस शेर में शायर अपने उपनाम का प्रयोग करते हैं। और कबीर के इस ग़ज़ल के अंतिम शेर में ये दिखता है। सोचने वाली बात ये है कि इस ग़ज़ल का केन्द्रीय भाव प्रेम है। कबीर दास का पूरा जीवन समाज को सुधार और उपदेश देने में ही ख़त्म हुआ। कबीर दास में एक प्रकार की निश्छलता नज़र आती है। और वही निश्छलता कबीर दास की ग़ज़ल में भी देखने को मिलता है। एक शेर देखें,

हमन हैं इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या

रहें आज़ाद या जग से हमन दुनियां से यारी क्या

कबीर दास जी का ये शेर लोगों की जबान पर आज भी है। इस शेर में कबीर दास का जीवन दर्शन छुपा हुआ है। कबीर कह रहे हैं हम तो इश्क के मस्ताने हैं। कबीर कहते हैं कि जो प्रेमी होते हैं, भक्त होते हैं उनमें छल कपट नहीं होता है। प्रेम में किसी तरह की चालाकी का स्थान नहीं होता। हमको दुनियां से क्या काम। हम इस दुनियां का हिस्सा रहे अथवा नहीं रहें उससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। और जब हम कबीर का पूरा जीवन और साहित्य देखते हैं तो हमें यही तो दिखता है। कबीर दास जी का प्रेम व्यक्तिगत होकर भी व्यक्तिगत नहीं रह गया है। कबीर दास के इस प्रेमी और अक्खड़ स्वभाव को उजागर करते हुए पुरुषोत्तम अग्रवाल लिखते हैं,

"कबीर दास का प्रिय अलौकिक हो सकता है, लेकिन उसके प्रति कबीर दास के प्रेम की भाषा पूरी तरह लौकिक है। कबीर दास की प्रेमाभिव्यक्ति पाठक को अलौकिक का नहीं, लोकोत्तर का अहसास कराती है। उनकी कविता में शब्दबद्ध प्रेम में आप अपना प्रेम पढ़ सकते हैं। वह लोकोत्तर अनुभव प्राप्त कर सकते हैं जो अभिनवगुप्त के अनुसार केवल कविता में ही सम्भव है, न योग में, न शास्त्र में। कोई जरूरी नहीं कि आप कबीर दास की हर बात से सहमत ही हों। कबीर दास के, या किसी भी कवि के प्रसंग में यह भी महत्त्वपूर्ण नहीं कि उसके लौकिक प्रेमपात्र को खोज निकालने की जासूसी में पाठक सफल हुआ या नहीं। बड़ी बात यह है कि वह कवि के रहस्यवाद में अपने प्रेम की आवाज सुन पाया या नहीं। इसी पैमाने पर पाठक की भी परीक्षा होती है और कवि की भी। फिर, सवाल यह भी है कि रहस्यानुभव जिस ज्ञानमीमांसा में रचा-बचा है, वह जीवन और समाज के रहस्यों के बारे में कोई अन्तर्दृष्टि देती है, या उन्हें और भी बेबूझ बनाती है। कबीर दास तो अपनी बानी को सुरझावनिहारी कहते ही हैं, पाठक को जाँचना यह है कि सही कह रहे हैं या नहीं।"[7]

एक शेर देखें,

जो बिछड़े हैं पियारे से भटकते दर-ब-दर फिरते

हमारा यार है हम में हमन को इंतज़ारी क्या

कबीर दास का मानना ये है कि हमारे जीवन में जो ये भटकाव है वो सिर्फ और सिर्फ अपने प्रिय अथवा प्यारे से नहीं मिलने के कारण है। जिस दिन हमें प्यार करने वाला मिल जायेगा या हम जिससे प्रेम करते हैं अगर वो हमें मिल जाता है तब हमारे जीवन का उद्देश्य पूरा हो जायेगा। इससे हमारे जीवन में शांति आ जाएगी। दौड़ भाग और परेशानी समाप्त हो जाएगी। कबीर यहां ये स्पष्ट करते हैं की उनको जिससे प्रेम है या जिसको पाने की लालसा है वो उनके ह्रदय में ही है। उनको किसी का इंतजार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप जिनसे प्रेम करते हैं अगर उन्हें आप अपने ह्रदय में स्थान देंगे फिर आपको किसी की राह देखने की जरूरत नहीं होगी। अगला शेर देखें,

ख़लक़ सब नाम अपने को बहुत कर सर पटकता है

हमन गुरनाम सांचा है हमन दुनियां से यारी क्या

कबीर के इस शेर में आज के समाज की बिडम्बना नज़र आती है। कबीर का मानना ये है कि इस जगत का प्राणी संसार में अपना नाम करने के लिए दिन रात एक कर देता है। परेशान रहता है। कोई सुखी नहीं है। लेकिन हमें तो अपने गुरु अपने ईश्वर का नाम ही सच्चा नज़र आता है। इसके आलावे और कुछ हमको प्यारा नहीं है। दुनियां में किसी और से क्या दोस्ती करनी है। किसी से क्या नेह जोड़ना है। सांसारिक मोह में फंसने का कोई अर्थ नज़र नहीं आता।

न पल बिछड़े पिया हम से न हम बिछड़े पियारे से

उन्हीं से नेह लागी है हमन को बे-क़रारी क्या

इस शेर में कबीर दास कहते हैं कि हम जिनसे प्रेम करते हैं, वो जो हमारे प्रिय हैं, हमारे प्रियतम हैं उनसे हम कभी एक पल, एक क्षण के लिए भी दूर नहीं हुए। और वो प्रियतम भी हमसे एक पल को हमसे दूर नहीं गए। हम जिनसे प्रेम करते हैं वो सदैव हमारे पास हमारे ह्रदय में ही रहते हैं। इस कारण हमें किसी तरह की बेचैनी नहीं होती। घबराहट नहीं होती। अब इस ग़ज़ल का अंतिम और मकते का शेर देखें,

कबीरा इश्क का माता दुई को दूर कर दिल से

जो चलना राह नाज़ुक है हमन सर बोझ भारी क्या

इस शेर में कबीर दास जी अद्वैत की स्थापना पर बल देते हुए कहते हैं कि हमारे दिल में जो दो का भाव है उसको प्रेम को पाने के लिए ख़त्म करना होगा। प्रेम में दो का स्थान नहीं होता है। प्रेम के लिए समर्पण करना बहुत आवश्यक होता है। और प्रेम के इस रास्ते में मन को बहुत हल्का रखने की आवश्यकता होती है। सांसारिक मोह, बंधन में बंधकर हम प्रेम को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। प्रेम का रास्ता बहुत आसान नहीं होता है। ये रास्ता बहुत कोमल और संवदेनशील होता है।

कबीर दास की कविता की सबसे बड़ी ताकत, उसकी कालजयिता यही है कि वह आपको सम्बोधित ही नहीं करती, आपको विषय भी बनाती है। शर्त यही है कि आत्मतुष्टता की बजाय थोड़े आत्मबोध के साथ पढ़ी जाए।

निष्कर्षतः-

हम कह सकते हैं कि कबीर दास का योगदान हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में एक ही ग़ज़ल होने के बाद भी बहुत महत्वपूर्ण है। संख्या की दृष्टि से एक ही ग़ज़ल है लेकिन अर्थ और प्रभाव की दृष्टि ये ग़ज़ल बहुत महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि हिन्दी ग़ज़ल के विकास में कोई भी अध्येता और आलोचक कबीर को छोड़कर आगे नहीं बढ़ता है। जब भी हिन्दी ग़ज़ल की बात होती है तो कबीर को याद किया जाता है। कबीर दास आज भी इतने प्रचलित इसी कारण से हैं कि उनकी कविताएँ आज भी लोगों को याद हैं। उससे भी बड़ी बात ये है कि

वैसे लोगों को भी याद है जो पढ़े लिखे नहीं हैं। कबीर दास की भाषा इतनी सरल और आम फहम है कि किसी को भी उनकी कविता सामान्य ही लगती है। और उसमें गेयता ऐसी की किसी को भी आसानी से ये याद हो जाये। यही कारण है कि कबीर दास की भाषा को श्यामसुन्दर दास ने पंचमेल खिचड़ी कहा तो रामचंद्र शुक्ल ने सधुक्कड़ी कहा तो हजारी प्रसाद द्विवेदी ने वाणी का डिक्टेटर ही कह दिया। बहुत सरलता से अपनी बात कह देना कबीर दास जी की उपलब्धि है। भाषा सरल होते हुए भी अर्थ की दृष्टि से उनकी हर बात बहुत गंभीर होती है।

हम कह सकते हैं कि कबीर दास के बाद एक लम्बी यात्रा ग़ज़ल की है। जिसमें रीतिकालीन कवियों की भूमिका को भी नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता है। आधुनिक काल में भारतेंदु के पिता और स्वयं भारतेंदु ने रसा उपनाम से हिन्दी में ग़ज़लें लिखी हैं। इसके बाद निराला, जयशंकर प्रसाद ने गज़लें लिखी। हिन्दी ग़ज़ल को दुष्यंत ने एक नई पहचान दी। आज ग़ज़ल हिन्दी काव्य की सबसे लोकप्रिय विधाओं में से एक है। आज हिन्दी ग़ज़ल की किताबें लगातार प्रकाशित हो रही हैं। आलोचनात्मक कार्य के साथ ही विश्वविद्यालय स्तर पर भी काम हो रहे हैं। हिन्दी ग़ज़ल का एक लम्बा संघर्ष इस बात का रहा है कि उसे साहित्य में स्थान मिल जाये। और आज वो फलीभूत होता हुआ नज़र आ रहा है। इसमें अमीर खुसरो से लेकर कबीर दास और भारतेंदु से लेकर निराला, दुष्यंत कुमार से लेकर आज लगतार ग़ज़ल लिखने वाले लोगों में वशिष्ठ अनूप, अनिरुद्ध सिन्हा, डॉ. भावना, ओमप्रकाश यती, रामदरश मिश्र, शिवनारायण, डॉ. जियाउर रहमान जाफरी, पंकज कर्ण, के. पी. अनमोल, अभिषेक सिंह, और अविनाश भारती जैसे नाम उल्लेखनीय हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

भारती अविनाश, हिन्दी ग़ज़ल के साक्षी, श्वेतवर्णा प्रकाशन, पहला संस्करण, 2024

अस्थाना रोहिताश्व, हिन्दी ग़ज़ल का उद्भव और विकास, सामयिक प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 2007

विवेक ज्ञान प्रकाश, हिंदी ग़ज़ल की नई चेतना, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2021

सिंह विजय बहादुर, भारतीय साहित्य के निर्माता दुष्यंत कुमार, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, चौथा संस्करण, 2014

मुजीब मुहम्मद, भारतीय साहित्य के निर्माता गालिब, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, बारहवां संस्करण, 2018

कौशिक माधव, समकालीन हिन्दी ग़ज़ल संग्रह, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2021

डॉ. अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, पांचवां संस्करण, 2018

अग्रवाल पुरुषोत्तम, अकथ कहानी प्रेम की कबीर दास की कविता और उनका समय, राजकमल प्रकाशन, चौथा संस्करण, 2022

विवेक ज्ञानप्रकाश, हिन्दी ग़ज़ल की शक्ति और संचेतना, श्वेतवर्णा प्रकाशन, पहला संस्करण, 2023

https://acharyaprashant.org/en/articles/haman-hai-ishq-mastaana-1_c3f0686

https://www.youtube.com/watch?v=S6L2zUpj7YI